सुविचार- एक बात कि अपने मन में गांठ बांध ले, इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है.

कविता

फूलों सा मुस्कायें

हम भी फूलों सा मुस्कायें
लाल, गुलाबी, नीले, पीले,
विविध रंग के फूल खिले हैं.
मुझको तो लगता है जैसे,
आपस में सब मिले मिले हैं.

कांटो की टहनी पर मिलकर,
है गुलाब देखो मुस्काता.
हंसता रहता सदा इसी से,
फूलों का राजा कहलाता.

चंपा,जूही और चमेली,
की भी बात बड़ी है न्यारी.
महक लुटाये भीनी-भीनी,
महक उठे सारी फुलवारी.

कहानी

गधे ने होटल खोला

मुर्खानंद गधे ने जब होटल खोला, तो जंगल के जानवरों को बड़ा आश्चर्य हुआ. कारण वे सभी यह अच्छी तरह जानते थे कि गधे जी होटल नहीं चला पाएँगे. भला अनपढ़ भी किसी काम का होता है, वह तो बस मज़दूरी कर सकता है. लेकिन मुर्खानंद गधे ने उन सभी की धारणा को गलत साबित कर दिखाया था और उसका होटल खुलने के तीन-चार दिन बाद से ही अच्छा खासा चल निकला था. लेकिन एक दिन उसके होटल के तरफ भारी भीड़ जमा हो गई थी, जब जानवरों ने देखा कि चीकू खरगोश बब्बर शेर के साथ होटल में प्रवेश कर रहा था. होटल के एक-एक कर्मचारी उन्हें घूर-घूर कर देख रहे थे. पर उन दोनों ने इसकी परवाह नहीं की और एक सीट पर जा बैठे. उन्हें बैठता देखते ही एक बैरा दौड़ता हुआ आया और उसने खरगोश से पूछा, साहब, खाने में क्या-क्या लाऊं?

भाई, मैं तो शाकाहारी हूं इसलिए मेरे लिए आलू-परवल की सब्जी और रोटी, चावल, दाल आदि ले आना और मेरे मित्र महोदय के लिए एक गिलास मैंगो जूस. खरगोश ने आर्डर दिया.

शेर के लिए सिर्फ एक गिलास मैंगो जूस का आर्डर सुनकर, बैरे को बड़ा आश्चर्य हुआ. उसने झट खरगोश से पूछा, क्यों साहब, क्या आपके मित्र महोदय को भूख नही लगी है, जो आप सिर्फ एक गिलास मैंगो जूस का आर्डर दे रहे हैं.

बैरे की यह बात सुनकर खरगोश ठहाका मार कर हंस पड़ा. हंसते हुए बोला, भाई, तुम ही बताओ, यदि मेरे इन मित्र महाशय को भूख लगी होती, तो क्या मैं इतने आराम से इस होटल में बैठा होता. यह सुनते ही बैरा तो भाग गया, लेकिन शेर की आंखें शर्म से झुक गईं. वह बिना मैंगो जूस पिए ही वहां से चला गया.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

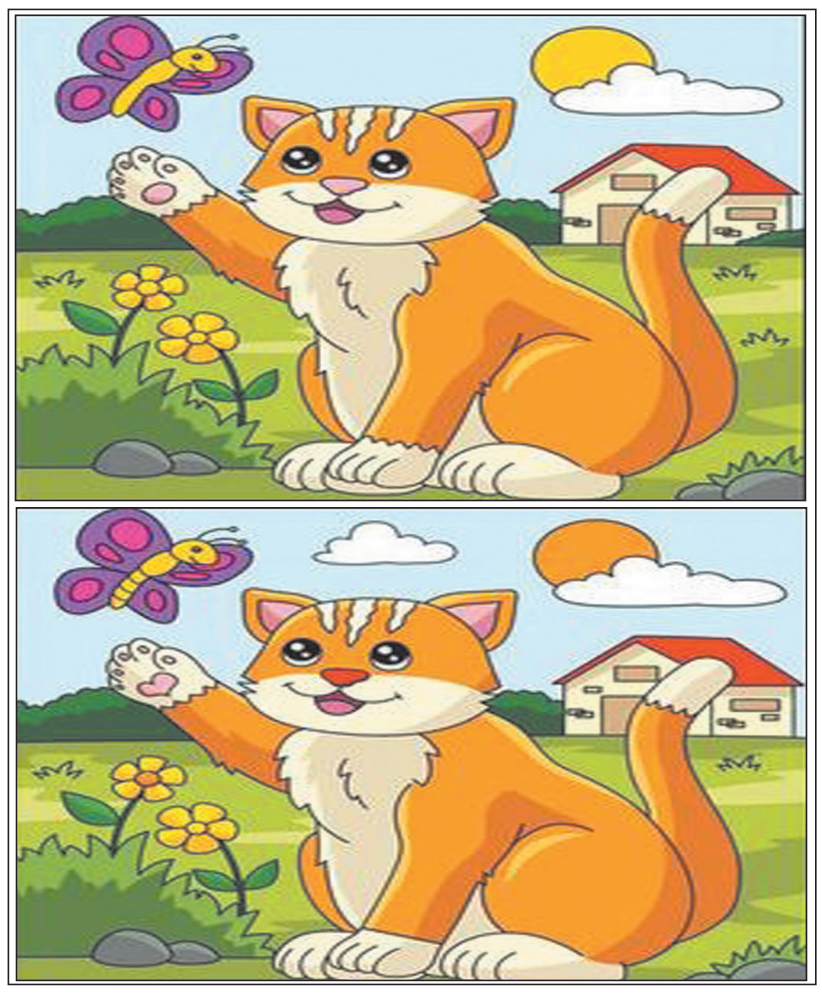

उत्तर :- 1. आकाश से बादल गायब, 2. सूर्य का रंग अलग, दरवाजे की साइड की डिजाइन. 4. बिल्ली की नाक के कलर में अंतर, 5. बिल्ली की पूंछ के पीछे की घास का एक पत्ता कम, 6. बिल्ली के हाथ के पंजे की डिजाइन

भारतीय सैनिकों के स्मारक के रूप में खड़ा है इंडिया गेट

इंडिया गेट एक युद्ध स्मारक है जो नई दिल्ली की औपचारिक धुरी के पूर्वी किनारे पर कर्तव्य पथ के पास स्थित है, जिसे पहले राजपथ कहा जाता था. यह भारतीय सेना के 74,187 सैनिकों के स्मारक के रूप में खड़ा है, जो 1914 और 1921 के बीच प्रथम विश्व युद्ध में फ्रांस, फ्लैंडर्स, मेसोपोटामिया, फारस, पूर्वी अफ्रीका, गैलीपोली और निकट और सुदूर पूर्व और तीसरे विश्व युद्ध में मारे गए थे.

आंग्ल-अफगान युद्ध यूनाइटेड किंगडम के कुछ सैनिकों और अधिकारियों सहित 13,300 सैनिकों के नाम गेट पर अंकित हैं. सर एडविन लुटियंस द्वारा डिज़ाइन किया गया यह गेट प्राचीन रोमन विजयी मेहराबों जैसे रोम में कॉन्सटेंटाइन के आर्क और बाद में स्मारक मेहराबों की स्थापत्य शैली को दर्शाता है. इसकी तुलना अक्सर पेरिस में आर्क डी ट्रायम्फ और मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया से की जाती है.1972 में बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के बाद, एक संरचना जिसमें उलटी राइफल के साथ एक काले संगमरमर का चबूतरा है, जो एक युद्ध हेलमेट से ढका हुआ है और चार अनन्त लपटों से घिरा हुआ है, तोरणद्वार के नीचे बनाया गया था. अमर जवान ज्योति नामक यह संरचना 1971 से भारत के अज्ञात सैनिक की कब्र के रूप में काम कर रही है. इंडिया गेट विस्मयकारी गणतंत्र दिवस परेड की मेजबानी भी करता है, जब राष्ट्रपति अमर जवान ज्योति पर पुष्पांजलि अर्पित करते हैं. इसके बाद, राजपथ पर एक भव्य परेड आयोजित की जाती है और आप टुकड़ियों, टैंकों, जीवंत झांकियों, हथियारों को एक साफ फ़ाइल में आयोजित होते हुए देख सकते हैं. स्कूली बच्चे और लोक नर्तक परेड में शामिल होते हैं और पूरे समारोह में एक सांस्कृतिक स्पर्श जोड़ते हैं.

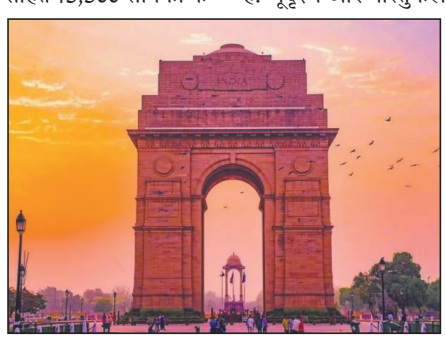

स्मारक परिसर राजसी कर्तव्य पथ और सेंट्रल विस्टा के मौजूदा लेआउट और समरूपता के अनुरूप है. भूदृश्य और वास्तुकला की सादगी पर जोर देकर माहौल की गंभीरता को बनाए रखा जाता है. मुख्य स्मारक के अलावा, उन सैनिकों की प्रतिमाओं के लिए समर्पित क्षेत्र है जिन्हें देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया है. मुख्य स्मारक का डिज़ाइन इस बात का उदाहरण है कि कर्तव्य के दौरान एक सैनिक द्वारा किया गया सर्वोच्च बलिदान न केवल उसे अमर बनाता है बल्कि यह भी दर्शाता है कि एक सैनिक की भावना शाश्वत रहती है.पूरे परिदृश्य के भीतर विवरण, सामग्री और रंगों को उजागर करने के लिए प्रकाश योजना को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के समग्र डिजाइन के कपड़े में सिल दिया गया है. यह वास्तुकला के साथ सहजता से एकीकृत होता है ताकि एक गहन और विचारोत्तेजक वातावरण प्रदान किया जा सके.

भूल भूलैया

मधुमक्खी कार्नर बुकमार्क कैसे बनायें

मधुमक्खी कार्नर बुकमार्क- यह एक बहुत आसान और जल्दी से बनने वाली कला है.

सामग्री:

एक पीले रंग का समकोड़ चतुर्भुज (स्क्वायर) कागज (हमने ऐ 4 सेंटीमीटर को 2 स्क्वायर में काट लिया है जो 15 गुणा 15 सेंटीमीटर का है)

- कुछ सफेद कागज के टुकड़े
- कुछ काले कागज के टुकड़े
- काला पेन
- गोंद
- कैंची

बनाने का तरीका

अपने बुकमार्क को पलटे, आप पूरे पीले कागज का इस्तेमाल कर रहे है. टिप से इसे गोल आकर में काटे और अपनी मधुमक्खी का सर बनाये.

अब अपने बुकमार्क के लिए 1-1 सेंटीमीटर चैड़ी काली

धारिया काटे और दो बड़ी धारिया काटे जो इसके पंख बनेंगे.

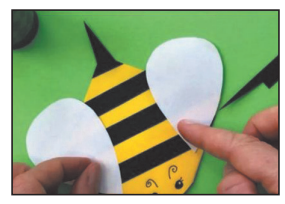

अब इन धारियों को मधुमक्खी के पीछे चिपकाये. हमने चार काली लाइनों का इस्तेमाल किया है. एक बार चिपकने के बाद आप एक्स्ट्रा धारियों को काट भी सकते है और उसे अपने बुकमार्क के कोने की शेप जैसा कर सकते है. हमने छोटी काली पूछ भी बनायीं है . मधुमक्खी की आँखे बनाये. और आखिरकार मधुमक्खी के पंख चिपकाये. आपका मधुमक्खी कार्नर बुकमार्क अब बनकर तैयार है.

प्रेरक प्रसंग

सबसे कम उम्र की नोबेल पुरस्कार विजेता हैं मलाला यूसुफजई

लाला यूसुफजई महिला शिक्षा के लिए पाकिस्तानी कार्यकर्ता और सबसे कम उम्र की नोबेल पुरस्कार विजेता हैं. वह उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में अपने पैतृक स्वात घाटी में लड़कियों की शिक्षा की वकालत के लिए जानी जाती हैं.

मलाला यूसुफजई का जन्म 12 जुलाई, 1997 को पाकिस्तान के मिंगोरा में हुआ था. मिंगोरा पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत की स्वात घाटी का सबसे बड़ा शहर है. यूसुफजई जियाउद्दीन और तोर पेकाई यूसुफजई के तीन बच्चों में से पहली थीं. हालाँकि पाकिस्तान में लड़कियों की परवरिश करना हमेशा आसान नहीं था, लेकिन मलाला यूसुफजई के पिता ने जोर देकर कहा कि उन्हें लड़कों समान सभी अवसर मिलें. उनके पिता एक शिक्षक और शिक्षा समर्थक थे जो अपने गाँव में लड़कियों का स्कूल चलाते थे.

जब 2008 में इस्लामिक तालिबान आंदोलन ने घाटी पर कब्ज़ा कर लिया, तो लड़कियों के स्कूल जला दिए गए. मलाला ने घटनाओं की एक डायरी रखी, जिसे 2009 में बीबीसी उर्दू ने प्रकाशित किया. अपनी डायरी में उन्होंने तालिबान के आतंकवादी शासन के खिलाफ़ आवाज़ उठाई. एक अमेरिकी डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म ने मलाला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर बना दिया.

कुछ ही समय बाद तालिबान ने उनकी जान को ख़तरा पैदा कर दिया. 2012 में, मलाला को एक स्कूल बस में तालिबान के एक बंदूकधारी ने सिर में गोली मार दी. वह बच गईं, लेकिन उन्हें इंग्लैंड भागना पड़ा और वहाँ निर्वासन में रहना पड़ा क्योंकि उसके खिलाफ़ एक फ़तवा जारी कर दिया गया था.2014 में, यूसुफजई और उनके पिता ने महिलाओं और लड़कियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थन और वकालत करने के लिए मलाला फंड की स्थापना की. अपनी चैरिटी के माध्यम से, उन्होंने जॉर्डन में सीरियाई शरणार्थियों, केन्या में युवा महिला छात्रों से मुलाकात की और नाइजीरिया में आतंकवादी समूह बोको हराम के खिलाफ आवाज उठाई, जिसने युवा लड़कियों को स्कूल जाने से रोकने के लिए उनका अपहरण किया था.

दिसंबर 2014 में, यूसुफजई को उनके काम के लिए नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया. सत्रह साल की उम्र में, वह नोबेल पुरस्कार विजेता नामित होने वाली सबसे कम उम्र की व्यक्ति बन गईं. तब से, यूसुफजई महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों की वकालत करती रही हैं.

बूझो तो जानें

- दो सुंदर लड़के, दोनों एक रंग के, एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए.
  जवाब- जूते
- एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिरे वो थाल, मोती उससे एक न गिरे.
  जवाब- आकाश और तारे
- गोल है पर गेंद नहीं, पूँछ है पर पशु नहीं, पूँछ पकड़कर खेलें बच्चे, फिर भी मेरे आँसू न निकले
  जवाब- गुब्बारा
- वह क्या है, जो सबके पास है, हमेशा साथ रहती है और उसे कोई चुरा नहीं सकता.
  जवाब- परछाई
- वह क्या है जो हमारी मुट्ठी में हैं लेकिन हाथ में नहीं है.
  जवाब- हथेली की लकीरें
- क्या ऐसा हो सकता है कि कोई आदमी लगातार 10 दिन सोए बिना रह सके.
  जवाब- हाँ, क्योंकि हम रात में सोते हैं, दिन में नहीं.
- मैं एक फूल भी हूँ, फल भी हूँ और मिठाई भी हूँ, मेरा नाम क्या है?
  जवाब-गुलाबजामुन
- मेरी पूंछ पर हरियाली, तन है मगर सफेद, खाने के हूँ काम आती, अब बोलो मेरा भेद.
  जवाब- मूली

हंसी-ठिठोली

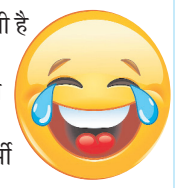

- राज- अगर तुम्हें गर्मी लगती है तो क्या करते हो?
  मोटू- मैं कूलर के पास जाकर बैठ जाता हूं.
  राज- अगर फिर भी गर्मी लगती है तो क्या करते हो?
  मोटू- तो फिर मैं कूलर चालू कर लेता हूं.
- एक बुजुर्ग व्यक्ति - बेटा कैसे हो
  बच्चा -ठीक हूं
  बुजुर्ग - पढ़ाई कैसी चल रही है?
  बच्चा - बिलकुल आपकी जिंदगी की तरह. !
  बुजुर्ग - मतलब?
  बच्चा - भगवान भरोसे. !!
- बेटा बियर पीकर घर लौटा था
  पापा की डांट से बचने के लिए लैपटॉप खोलकर पढ़ने लगा
  पापा- बेटा तु फिर से पीकर आया है ???
  बेटा - नहीं पापा नही मै नही पिया हूंज.
  पापा - तो फिर सूटकेस खोलकर क्या पढ़ रहा है?
- पति- मैं नाश्ता नहीं करूंगा, लेट हो रहा है.
  पत्नी- मैंने पराठे आज वाइन डालकर बनाए हैं.
  4 पराठे खाने के बाद पति- मजा आ गया, कौन सी वाइन डाली थी?
  पत्नी- अजवाइन.
  सुनते ही पति के होश उड़ गए.
- टीचर गुस्से में पप्पू से- यहां मैं पढ़ा रही हूं और तुम बाते कर रहे हो?
  पप्पू, टीचर से-यहां हम बातें कर रहे हैं और आप हमें पढ़ाने में लगी हैं!

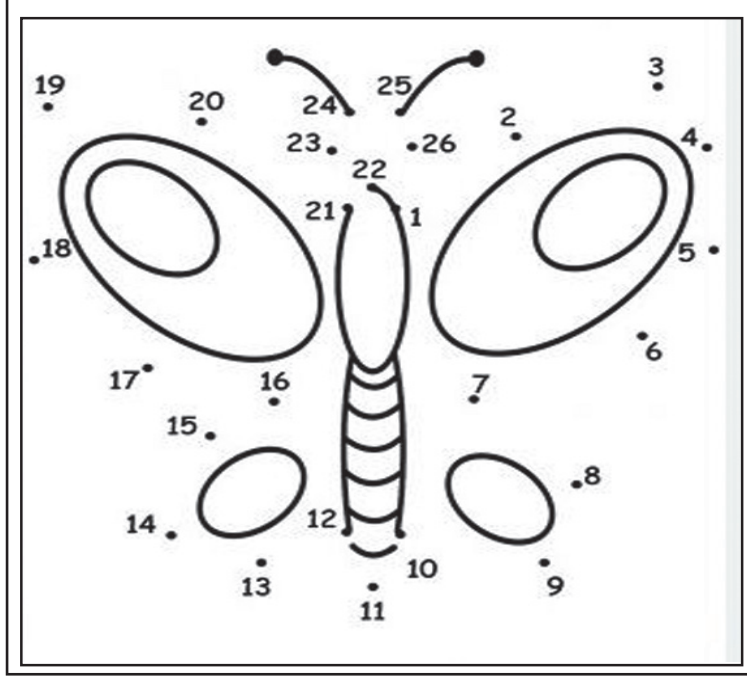

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

बिंदु मिलाओ

रंग भरो